International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 4, July-August, 2025

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. सुनिता कुमारी शर्मा, किरण बरडवाल

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, बियानी गर्ल्स बी. एड. कॉलेज
[2]बी. एड. एम. एड. छात्रा बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज

सारांश

मानसिक योग्यता एक व्यक्ति की उस आंतरिक क्षमता को सूचित करती है। जिसके माध्यम से वह किसी स्थिति का विश्लेषण, मूल्यांकन और समाधान कर सकता है। इसमें स्मृति, ध्यान, कल्पना विश्लेषण निर्णय शक्ति तथा तर्क जैसी क्षमताएं सम्मिलित होती है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में जहां शैक्षिक उपलब्धि को एक प्रमुख मापक माना जाता है। वहीं मानसिक योग्यता एक ऐसी बौद्धिक सम्पदा है जो विद्यार्थी की अकादमिक सफलता को शिक्षा से जुडी है। बल्कि यह जीवन में निर्णय वातावरण से तालमेल बिठाने की क्षमता में भी सहायक होती है। शहरी और ग्रामीण छात्रों के शैक्षिक अनुभव, संसाधनों की उपलब्धता तथा भौतिक वातावरण में महत्वपूर्ण अंतर होता है। प्रस्तुत शोध की प्रस्तावना को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन नामक शिर्षक पर अध्ययन किया। शोध में प्रयोग आने वाले आंकडों के संकलन के लिए अनुसंधान विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग करते हुए स्वनिर्मित प्रश्नावली को उपकरण के रूप में किया गया है। शोध अध्ययन के न्यादर्श के रूप में 200 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का चयन किया गया एवं साथ ही आंकडो के प्रस्तुतीकरण के लिए मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग करते हुए आंकडो का सारणीयन एवं बार ग्राफ प्रस्तुतीकरण किया गया।

की–वर्ड :–माध्यमिक स्तर, मानसिक योग्यता, तुलनात्मक

प्रस्तावना

आज का युग महिला सशक्तिकरण का युग कहलाता है, लेकिन वास्तविकता यह है कि महिलाएँ आज भी कई क्षेत्रों में असमानता और भेदभाव का सामना कर रही है। महिलाएँ विश्व की लगभग 50ः जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करती है, लेकिन आज भी वे समाज के अनेक क्षेत्रों में असमानता और भेदभाव का सामना कर रही है।संयुक्त राष्ट्र संघ ;न्छव्ए 1982द्ध की रिपोर्ट के अनुसार, महिलाएँ विश्व के कार्य घंटो का लगभग 66ण्6ः कार्य करती है, लेकिन उन्हें केवल 10ः आय प्राप्त होती है और वे 1ः से से भी कम संपत्ति की स्वामिनी है। यह आंकडे दर्शाते है कि महिलाएं सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, राजनीतिक और धार्मिक. इन सभी प्रमुख अधिकारों में अभी भी पिछड़ी हुई है।

भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में संविधान के अनुच्छेद 14, 15 और 16 सभी नागरिकों को समानता, स्वतंत्रता और अवसर प्रदान करने की गारंटी देते है, फिर भी महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में अभी और प्रयासों की आवश्यकता है। आज महिला सशक्तिकरण सशक्तिकरण केवल एक सामाजिक मुद्दा नहीं रहा, बल्कि यह एक राष्ट्रीय प्राथमिकता बन गया है। महिला सशक्तिकरण तभी संभव है जब समाज की मानसिकता बदले और पुरुषों के साथ साथ युवा पीढ़ी विशेष रूप से शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्र–छात्राएं इस दिशा में सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाएं। छात्र–छात्राएं किसी भी राष्ट्र के भविष्य के निर्माता होते है। यदि वे महिला सशक्तिकरण को सकारात्मक रूप से समझते और अपनाते है, तो एक समतामूलक एवं विकसित समाज का निर्माण संभव हो

सकता है। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति महिला सशक्तिकरण के प्रति कैसी है, इसका अध्ययन किया जाए।

अध्ययन का औचित्यदृ

माध्यमिक स्तर शिक्षा की वह महत्वपूर्ण अवस्था होती है। जहां विद्यार्थी की बौद्धिक मानसिक तथा सामाजिक क्षमताओं का तीव्र विकास होता है। इस स्तर पर विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का समुचित मूल्यांकन न केवल उनके शैक्षणिक प्रदर्शन समझने में सहायक होता है। बल्कि यह शिक्षण विधियों नीतियों को अधिक प्रभावशाली बनाने में भी सहायक हो सकता है।

वर्तमान समय में जब शिक्षा क्षेत्र में निरन्तर प्रतिस्पर्धा बढ़ रहीं है तो यह आवश्यक हो गया है कि विभिन्न सामाजिक, भौगोलिक व संस्थागत पृष्ठभूमियों से आने वाले विद्यार्थियों की मानसिक क्षमताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए। इससे यह समझा जा सकता है –

1. शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता में क्या अंतर है?
2. शहरी व ग्रामीण (लड़के व लड़कियों) के आधार पर मानसिक योग्यता में कोई विशेष अन्तर है।

समस्या कथन

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययन

सम्बन्धित साहित्य

1. **एम. राजकुमार (2024)– "रोल ऑफ योगा एण्ड मेडिटेशन इन झजिंग मैंटल एबिलिटी, सैल्फ कॉन्सेप्ट एण्ड एचीवमैंट मोटिवेशन अमंग स्कूल स्टूडेंट्स।" Alagappa University, Tamilnadu** उद्देश्य योगा और मेडिटेशन थैरेपी का स्कूल लेवल के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य आत्मसम्प्रत्य और अभिप्रेरणा स्तर पर पडने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।निष्कर्ष योगा और मेडिटेशन थैरेपी का स्कूल लेवल के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य आत्मसम्प्रत्यय और अभिप्रेरणा स्तर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
2. **Kamboj Shilpa, Anjali Malik & Kohli Sarveep (2023), मैन्टल एबिलिटी ऑफ परोन्ट विद क्रानिक डिजिट जर्नल ऑफ इण्डिया एबिलिटी साइक्लोजी Volume No.-11, P.P.-66-68**उद्देश्य सकारात्मक सोच की लम्बी बीमारी पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।निष्कर्ष सकारात्मक सोच द्वारा लम्बी बीमारी को नियन्त्रित किया जा सकता है।
3. **Verma Kavita (2022)-इन्ट्रक्टिव इफैक्ट ऑफ जैण्डर टाइप ऑफ स्कूल एण्ड मैंटल एबिलिटी ऑन सोशियल एडजेस्टमेन्ट ऑफ एडोलैसैट्स Education Review Volume No.-53, PP 76. 82**उद्देश्य मानसिक स्वास्थ्य का सामाजिक समायोजन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।निष्कर्ष मानसिक स्वास्थ्य सामाजिक समायोजन को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।
4. **वी. एस. एडविन (2021)– मेंटल एबिलिटी स्टेट्स ऑफ टीचर एजुकेटर्स। तमिलनाडु युनिवर्सिटी पी.एचडी**उद्देश्य शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य स्तर को जानना।शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर लिंग के प्रभाव को जानना।निष्कर्ष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य का स्तर उच्च पाया गया।शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
5. **सुमन, (2020) पतंजलि योगाभ्यास का बाल अपराधियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं नैतिक निर्णय पर प्रभाव का अध्ययन। दयालबाग एजुकेशन इंस्टिट्यूट पी.एचडी** उद्देश्य प्रयोगात्मक एवं नियन्त्रित समूह के बाल अपराधियों के मानसिक स्वास्थ्य पर पतंजलि योग के प्रभाव को जानना।निष्कर्ष प्रयोगात्मक एवं नियंत्रित समूह के बाल अपराधियों के मानसिक स्वास्थ्य पर पतंजली योग के प्रभाव का कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

साहित्य विवेचना :–

प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का तुलनात्मक अध्ययनकरना है। इससे सम्बन्धित अध्ययन निम्न है –**एम. राजकुमार (2024), Kamboj Shilpa, Anjali Malik & Kohli**

Sarveep (2023), Verma Kavita (2022)एवी. एस. एडविन (2021), सुमन, (2020)उपरोक्त सभी अध्ययनो से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में जब शिक्षा क्षेत्र में निरन्तर प्रतिस्पर्धा बढ़ रहीं है तो यह आवश्यक हो गया है कि विभिन्न सामाजिक, भौगोलिक व संस्थागत पृष्ठभूमियों से आने वाले विद्यार्थियों की मानसिक क्षमताओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए।

उद्देश्य –

1. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र व शहरी छात्रों की मानसिक योग्यता का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्राओं व शहरी छात्राओं की मानसिक योग्यता का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों व शहरी विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता का अध्ययन करना।

परिकल्पना–

- माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्र व शहरी छात्रों की मानसिक योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्राओं व शहरी छात्राओं की मानसिक योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों व शहरी विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श –
शोधकर्त्री द्वारा शोध अध्ययन में न्यादर्श के रूप में 4 विद्यालयों के 200 विद्यार्थियों में 100 शहरी व 100 ग्रामीण विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

शोध अध्ययन के उपकरण –
प्रस्तुत शोध में मानकीकृत उपकरण के रूप में डॉ. श्याम स्वरूप जलौटा द्वारा मानसिक योग्यता की सामूहित परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पना :माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्राओं व शहरी छात्राओं की मानसिक योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

क्र. सं.	समूह	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य	निष्कर्ष
1.	शहरी छात्राएँ	50	56.72	3.06	9.60	अस्वीकृत (0.05 स्तर पर 1.98)
2.	ग्रामीण छात्राएँ	50	50.96	2.93		

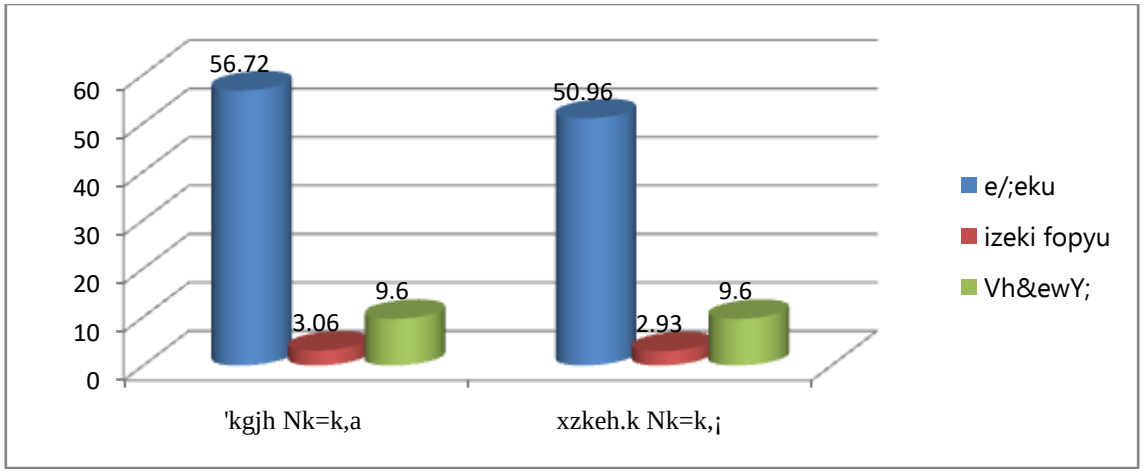

परिणाम

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि सारणी में माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्राओं व शहरी छात्राओं की मानसिक योग्यता का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी मूल्य को प्रदर्शित किया गया है। माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्राओं की मानसिक योग्यता का मध्यमान 50.96 तथा प्रमाणिक विचलन 2.93 है व शहरी छात्राओं की मानसिक योग्यता का मध्यमान 56.72 तथा प्रमाणिक विचलन 3.06 प्राप्त हुआ है। मध्यमानों में अंतर की सार्थकता ज्ञात करने हेतु टी–मूल्य 9.60 पाया गया जो कि 0.05 स्तर तालिका मूल्य 1.98 से ज्यादा है। अतः उपरोक्त परिकल्पना अस्वीकृत होती है। अतः माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्राओं व शहरी छात्राओं कि मानसिक योग्यता असमान होती है।

निष्कर्ष

मानसिक स्तर के ग्रामीण छात्र व शहरी छात्रों की मानसिक योग्यता में अन्तर पाया जाता है। अतः शहरी छात्रों को बेतहर शैक्षणिक संसाधन, सुविधाएं व वातावरण प्राप्त होन के कारण उनकी मानसिक योग्यता का स्तर अधिक हो सकता है। माध्यमिक स्तर के ग्रामीण छात्राओं व शहरी छात्राओं की मानसिक योग्यता में अंतर पाया जाता है। यह अंतर शहरी छात्राओं के पक्ष में गया, जिससे यह संकेत मिलता है कि शहरी परिवेश में उपलब्ध बेतहर शैक्षणिक संसाधनों तकनीकी पहुंच और प्रेरक शैक्षिक माहोल के कारण उनकी मानसिक योग्यता का स्तर अधिक हो सकता है। माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों व शहरी विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता में अंतर पाया जाता है। इससे स्पष्ट होता है कि निवास स्थान (ग्रामीण अथवा शहरी) विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता को प्रभावित करता है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मानसिक योग्यता के विकास में सामाजिक शैक्षिक एवं भौगोलिक परिवेश की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

सुझाव

यह शोध सरकार द्वारा लागू की गई शैक्षिक योजनाओं की सफलता का मूल्यांकन करने में सहायक होगा। यह नीति–निर्माताओं को विभिन्न क्षेत्रों और वर्गों में विद्यार्थियों की मानसिक योग्यता को ध्यान में रखते हुए योजनाएं बनाने में मदद करेगा। यह शोध शिक्षकों को विद्यार्थियों की मानसिक क्षमताओं के अनुसार शिक्षण विधियों में आवश्यक सुधार करने हेतु मार्गदर्शन प्रदान करता है। यह विद्यार्थियों को आत्म–मूल्यांकन व मानसिक विकास की दिशा में जागरूक करता है। यह शोध विद्यालयों को विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति के अनुसार गतिविधियाँ, पाठ्यक्रम व मूल्यांकन विधियों को संशोधित करने हेतु सुझाव देता है। यह शोध समाज को विद्यार्थियों की मानसिक क्षमताओं की समझ विकसित करने में मदद करता है, जिससे वे अपने बच्चों के लिए उपयुक्त शैक्षिक माहौल प्रदान कर सकें।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. **शर्मा, आर.ए. (2005)** : शिक्षा अनुसंधान, आर.एल.बुक डिपो, मेरठ, पृष्ठ संख्या–100
[2]. **कार्टर, जे.एफ.**–एन.इन्ट्रोडेक्शन टू रिसर्च प्रोसीजर्स इन एजुकेशन न्यूयार्क हारपर ब्रदर्स, 1956
[3]. **रमल जे.एफ.**–एन इन्ट्रोडेक्शन रिसर्च प्रो सीजर्स इन एजुकेशनल न्यूयार्क हारपर, ब्रदर्स, 1956
[4]. **टाकमन डब्ल्यू ब्रुस**–''कन्टक्टिंग एजुकेशनल रिसर्च, न्यूयार्क हरकोट
[5]. **व्हीटनी एफ.एल.**–द एलिमेन्ट ऑफ रिसर्च (1961) एलिंगबुडविलफप्रेन्टिस
[6]. **विलियम्स, के.ए. (1992)**– एक्टिव लर्निंग इन एक्शन
[7]. **टाउनसैंड जे.सी.**–इन्ट्रोडेक्शन टू एक्सपेरी मेन्टल मैथड्स मैकग्रहिल्स
[8]. **करलिंगर, एफ.एनः**–फाउन्डेशन ऑफ बिहेवियरल रिसर्च